Vol 5 Issue 7 April 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 7 | April - 2016

Review Of Research

शांति शिक्षा वर्तमान समय की आवश्यक्ता

राखी गिरीराज धिंग्रा

" Peace is achieved by all, not one
But Peace begins with one."

सारांश

शांति शिक्षा से तात्पर्य है ऐसी शिक्षा जो व्यक्ति में मानवीयता दया प्रेम स्नेह सहयोग सदभाव सामंजस्य अभय नैतिकता और अहिंसा की भावना जागृत कर सके और उसकी व्यवहार मे परिणति हो सके। शांति शिक्षा एक ऐसा प्रयास है जिसके द्वारा हम समाज मे विद्यमान समस्त द्वंद्वों को समाप्त कर सकते है। शांति शिक्षा तव तक सफल नहीं हो सकती जव तक व्यैक्तिक राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर सार्थक और दृढ़ प्रयास न किये जाये। साथ ही विश्व शांति स्थापित करने के लिए सिर्फ चित्त की शांति या सामाजिक शांति में से किसी एक स्तर पर प्रयास न करके दोनों स्तरों पर प्रयास अपेक्षित है। शांति शिक्षा का उद्देश्य शिक्षा के द्वारा शांतमय जीवन जगने वाले व्यक्ति का निर्माण करना है।अपनी संस्कृति सामाजिक जीवन का संपूर्ण अध्ययन विविधता में एकता और अपने जीवन मे आयी हुई समस्याओं को हल करने की कला ही शांति शिक्षा है। शांति शिक्षा यह स्वयं मे बदलाव और आत्मजागरूकता के निमार्ण के लिए अति आवश्यक है। शांति शिक्षा यह अहिंसा प्रेम दया

विश्वास ईमानदारी सहकार्य इन तत्वों पर आधारित है। सामान्यतः युध्द हिंसा व अत्याचार की अनुपस्थिती को ही शांति मान लिया जाता है किंतु ऐसा नहीं है क्योंकि यह आवश्यक नहीं की जहाँ हिंसा व युध्द ना हो वहाँ के व्यक्तियों मे प्रेम सौहार्द सद्भावना मित्रता के गुण पाये जाते हो। चुकिं प्रेम सद्भावना सहयोग मित्रता सौहार्द अपनत्व आदि शांति के ही प्रतीक है। मानव अपने जीवन में संघर्ष करता है कामयाव बनता है धन एकत्रित करता है भौतिक सुख सुविधाओं को प्राप्त करने का प्रयास करता है किंतु इन सब को पा लेने के वाद भी यदि उसके जीवन मे शांति नहीं है तो सभी सुख सुविधाएँ उसे व्यर्थ लगती है। इसलिये इसे प्राप्त करने के साधन पर भी विचार करना होगा।

प्रस्तावना

वर्तमान परिस्थिति में वैश्विकरण के कारण संपूर्ण विश्व एक दुसरे के करीव आ रहे है। इसके वावजुद भी आंतकवाद विभाजनवादि वृत्ति भ्रष्टाचार व्यक्तिक स्वंतत्रता की अवास्तविक कल्पना अन्याय अत्यचार दंर्गेफसाद जातिवाद नक्सलवाद दहशदवाद जैसी अनेक सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याएँ जिनकी सुची न खत्म होने वाली है का उदय हुआ है। इन समस्याओं से मानव के अस्तित्व के लिए खतरा निर्माण हो गया है। आज छोटी वडी किसी भी वजह से देश के किसी भी कोने मे हिंसात्मक कार्य हो रहे है। आज मानव एक हिंसात्मक युग में जी रहा है जहॉ हिंसा आज विचारों भाषणों व कियाओं में समाज का एक अंग बन गई है। हिंसा की यह व्याप्ती "गली से दिल्ली तक" न होकर " व्यक्ति से विश्व तक" पहुँच रही है। जव तक हमारे देश में हिंसात्मक वातें होती रहेगी तव तक देश में शांति और प्रगति होना कठिन है अगर हमें हिंसात्मक कार्यो को जड से निकाल फेंकना है तो हर व्यक्ति का हृदय परिवर्तित करना जरूरी है कारण जव तक यह हिंसात्मक विचार पृथ्वी पर विदयमान है तव तक मानव भी हिंसात्मक आचरण करता ही रहेगा।

एक जैन साधवी के लेख मे उल्लेख किया है " अपना घर इसलिए साफ मत रखों क्योंकि पडोसी ऐतराज करेगें समय की पावंदी इसलिए मत रखों क्योंकि

दुसरों को ऐसा करने मे कठिनाई होती है अहिंसा इसलिए मत अपनाओं क्योंकि दुसरों के लिए यह तकलीफ देय है वल्कि अहिंसक इसलिए बनो कि यह अपने आत्मा की प्रवृत्ति है।" मार्टिन लुथर किंग ने शांति को संदर्भित करते हुए कहा है कि "शांति केवल युध्द का अभाव ही नहीं अपितु न्याय एवं भाईचारे की विश्व में उपस्थिति भी है।" विश्व में विकासशील ही नहीं विकसित और सक्षम देश भी आंतकित और अशांत है। परस्पर भौगोलिक आर्थिक बौध्दिक राजनैतिक तथा सांस्कृतिक वर्चस्व और आधिपत्य की लालसा ने तमाम देशों को कुर और हिंसक बनाने में कोई कसर नहीं छोडी है। लाभ हानि के गणित एवं प्रथम स्थान की प्रतिस्पर्धा से आज मानव जाति मानवीयता से दुर होती जा रही है यदि इसमें इसी प्रकार निरन्तरता बनी रही तो जल्दी ही मानवीयता की परिभाषा ही बदल जाएगी जो संभवतः हमें पशुता की ओर ले जा सकती है। मानव की महत्ता बनाए रखने के लिए हमें विश्वस्तरीय प्रयास करनें होगे।

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व आंतकवाद एवं युध्द की आशंका की दहशियत में जी रहा है। मानव इतिहास मे युध्द इतना भयावह एवं विध्वंसकारी कभी नहीं रहा जितना वर्तमान समय में हो रहा है। कई प्रकार की विध्वंसकारी घटनाएँ जैसे वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर हमला मुम्बई मे बम विस्फोट देश मे आन्तरिक अशांति उत्पन्न करने वाले आदि के द्वारा यही प्रश्न सामने आता है कि इस समस्या का समाधान क्या हो ? तो इस समस्या का समाधान केवल शांति शिक्षा मे ही दिखाई देता है। दो विश्वयुध्द में हमने देखा कि जीतने वाले व हारने वाले दोनों को ही बडा नुकसान हुआ है अगर एक और विश्वयुध्द हुआ तो उसका परिणाम न सिर्फ संबंधित देशों में जान माल की भीषण हानि का होना है बल्कि विश्व का कोई भी राष्ट्र युध्द के दुष्परिणामों से अछुता नहीं रहेगा। आज विश्व मे बढता हुआ आंतकवाद स्पष्ट रूप से अशिक्षा बेरोजगारी निराशा एवं अराजकता का ही दुष्परिणाम है।अमेरिका भारत रूस व पाकिस्तान आज हर राष्ट्र आतंकवाद का सामना कर रहा है। "युध्द का समाधान युध्द" कदापि नहीं हो सकता है अतः शांति शिक्षा के द्वारा हम समस्त राष्ट्रों व विश्व में शांति की स्थापना कर सकते है। शांति शिक्षा के माध्यम से लोगों के मन को एकाग्रचित अध्यात्मिक व धार्मिक भावना से ओतप्रोत कर सकेगें जिससे उनमें नकारात्मक भावना जैसे विचार नहीं आयेगें।

वर्तमान विश्व तकनीकी एवं भौतिक संसाधनों की दृष्टि से बेहद सुविधा संपन्न है। भौतिक सुविधाओं की चाह कठोर प्रतिस्पर्धा तथा व्यक्तिगत महत्वकांक्षाओं के कारण जीवन में अनिंद्रा अवसाद चिन्ता तनाव हिंसक प्रवृत्ति व अशांति जैसी समस्याओं मे वृध्दि हुई है। मानव लक्ष्यहिन होकर दौंडा जा रहा है। शून्य से शिखर तक मानव जीवन में अशांति की धुन्ध गहरा रही है। वर्तमान समाज में बढते हुए संघर्ष तथा हिंसा ने शांति की आवश्यक्ता तथा महत्व को समझा दिया है। विगत कुछ वर्षो में मीडिया ने बालकों की सोच को काफी हद तक प्रभावित किया है। जैसे टेलीव्हिजन इंटरनेट गीत संगीत तथा बालकों के विडियों गेम्स इंटरनेट सर्फिग जैसी कियाओं द्वारा भी अशांति का वातावरण निर्माण हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में शांति चाहता है। भारतीय संस्कृति के सिध्दान्तों को अपनाकर इसे प्राप्त किया जा सकता है। जिस प्रकार कस्तुरी मृग अपने में निहित कस्तुरी गंध की प्राप्ती हेतु सतत दौडता रहता है उसी प्रकार मानव अपने में निहित शांति का अन्वेषण बाहय जगत में करता है इसकी प्राप्ती सदकर्मो परोपकार आत्ममंथन एवं सकारात्मक चिंतन के माध्यम से की जा सकती है। भारतीय संस्कृती बालक में ईश्वरीय अंश निहित मानती है अतः इसे बाल्यावस्था से ही तनावमुक्त एवं दायित्वबोध युक्त शिक्षा प्रंबध पर बल देती है। जिससे वह जीवन की भावी चुनौतियों का सामना सहजता से कर शांतिमय जीवन यापन कर सकें। शांति शिक्षा वर्तमान विश्व राष्ट्र समाज परिवार तथा प्रत्येक व्यक्ति के लिए नितांत आवश्यक है जिसे भारतीय संस्कृति की परम्पराओं आदर्शो एवं संस्कारों को आत्मसाद कर प्राप्त किया जा सकता है।

जेम्स पेज के अनुसार "शांति व्यक्ति के आत्मविश्वास को बढावा देती है। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को स्वंय जिम्मेदार होना चाहिए जैसे सामाजिक अन्याय और युध्द के परिणामों के प्रति जागरूक स्वंय का तथा दुसरों का कल्याण करने की भावना को प्रोत्साहन आदि।" शांति जीवन की एक शैली है एक मानसिक अभिवृत्ति है तथा श्रध्दा प्रेम विश्वास एवं सहयोग कि एक ईकाई है जिसे गवां देने पर मनुष्य तनाव ग्रस्त हो जाता है। शांति कैसे प्राप्त हो ? यदि यह जान लिया जाए इस पर मनन कर लिया जाए तभी शिक्षा व्यक्ति के प्रति अपने उददेश्य को पूर्ण करती है। अपने अहम को गलाकर समर्पण की नम्रता स्वीकार करना और बुरे मनोविकारों को ठुकरा कर परस्पर सहयोग करने का नाम है। शांति एक अनुभावात्मक भावना है इसके विचार मात्र से हदय को एक प्रकार की आरामदेह भावना का अनुभव होता है। स्थायी शांति स्थापित करने के लिए सम्पूर्ण विश्व को आगे आना होगा। विश्व के समस्त नागरिकों को इसमें अपना योगदान देना होगा। शांति ना तो विषय है न वस्तु वह तो अपनी चेतना का आत्यंतिक परिष्कार है अंतर्मन में छिपी हुई दुभावनाओं दुराग्रहों एवं समस्त कमजोरियों को जड से खत्म कर ही हम शांति कायम कर सकते है। आत्मसंयम आत्मविश्वास और आत्मज्ञान प्राप्त कर व्यक्ति को धीर गंभीर बनन पडता है तभी शांति प्राप्त होती है। शांति शांति शिक्षा के माध्यम से ही हो सकती है। यह शांति ऐसी हो जो न्याय क्षमता अहिंसा आदि मुल्यों का रोपण करे। शांति शिक्षा की आवश्यक्ता को ध्यान मे रखते हुए ही यू . एन जनरल असेम्बली रिसोल्युशन ने वर्ष "२००० से २०१०" तक के दशक को "शांति की संस्कृति तथा अहिंसा का दशक" घोषित किया गया है।

शांति क्या करती है? इस प्रश्न का उत्तर हमारे इतिहास मे छिपा हुआ है। प्राचीन काल से ही शांति की आवश्यक्ता महसुस की गई थी।गौतम बुध्द सम्राट अशोक महावीर जैसे महान व्यक्ति व राजाओं ने अपने माध्यम से इसका प्रचार व प्रसार किया। शांति क्या कर सकती है ऋ का सबसे जीता जागता सबुत है कि अहिंसा के मार्ग पर चलकर शांति के द्वारा भारत देश को गाधीजी ने स्वतंत्रता दिलाई है। १५० वर्षो तक कुरता पूर्वक राज्य करने वाले अंग्रेजो को महात्मा गांधीजी के अहिंसा आंदोलन जो कि शांति के तत्वों पर आधारित था के द्वारा बिना युध्द बिना हथियार के अंग्रेजो को देश से बाहर खदेड फेंका और कई वर्षो से जकडी हुई गुलामी से मुक्ति दिलाई। शांति किसी एक मस्तिष्क की स्थिति होती है जो व्यक्ति के कौशल अभिवृत्ति और व्यवहार को विससित करती है जिससे वह अपने वातावरण के साथ समायोजन के योग्य बनता है। शांति शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जो व्यक्ति मे सुरक्षा की भावना का विकास करती ह। इसका आधारभूत सम्प्रत्यय समाज में होने वाली हिंसा तथा समस्यात्मक घटनाओं के प्रति समाज को जागृत करने के लिए एक पृष्ठभूमि के रूप में है। वैश्विक युग में जो अशांति का वातावरण फैला हुआ है उसको बचाने के लिए आवश्यक है कि शांति की शिक्षा का अध्ययन करवाया जाए क्योंकि विद्यार्थी ही शांति पाठ के द्वारा इस अशांत वातावरण को समाप्त कर सकता है।

ऐसी स्थिती में शिक्षक का ही दायित्व बन जाता है कि विद्यार्थीयों को मूल्य शिक्षा नैतिक शिक्षा या ऐसी शिक्षा प्रदान करें कि वह शांतिपूर्वक जीवन जीने की कला सीख सकें। जिस प्रकार पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पर्यावरण शिक्षा को पुरे विश्व मे अनिवार्य घोषित किया गया है उसी प्रकार अब समय आ गया है जब मानव जाति व मानवाधिकारों की सुरक्षा के लिए संपूर्ण विश्व में शांति शिक्षा किसी ना किसी रूप में अनिवार्य की जाए।

प्रो. दया पंत (Program Coordinator –NCERT) के अनुसार मानव जीवन में शांति एक महत्वपूर्ण भाग हो गया है तथा वर्तमान समय छात्रों में शांति के बीज अंकुरित करने का समय है। सम्पूर्ण विश्व में शिक्षकों के लिए यह एक चुनौती है कि वे वर्तमान शिक्षा प्रणाली के साथ आगे बढे या फिर युवा पीढीं को इस लायक बनाए कि वे आगे जाकर जीवन में मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकें। आज विद्यालयों मे आंतकवाद भ्रष्टाचार बेरोजगारी आदि जैसे नकारात्मक प्रेषण पाठ पाठयकम में जोड दिये गये है व प्रायः इस पर निबंध लिखने को भी कह दिया जाता है। इस पर सुझाव है कि " बेरोजगारी की समस्या' प्रकरण नकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है इस प्रकरण को यदि " रोजगार के उपाय" इस नाम से पढाया जाए तो अधिक प्रभावी बन पडेगा। उसी प्रकार "आंतकवाद के प्रभाव" की बजाय "विश्व शांति का महत्व" तथा "बेईमानी के परिणाम" की अपेक्षा "ईमानदारी के लाभ" बताए जाने चाहिए। आज के दौर में शिक्षा का अहम दायित्व यह बनता है कि हम छात्रों में कम से कम उन कौशलों का समावेश आवश्यक रूप से करें जो विषम परिस्थितियों में छात्र को जीवन संर्घष हेतु सहायता प्रदान कर सके।

अध्यापक भावी पीढ़ी का कर्णधार व निर्माता होता है अतः अध्यापक अपनी पद की गरिमा बनाए तथा सच्चे शिष्य पैदा करें जो देश की प्रगति में अपना योगदान दे। समाज मे शिक्षक का व्यक्तित्व आदर्श एवं अनुकरणीय माना गया है। शिक्षक परिवर्तन एवं नए विचारों का शक्तिगृह होता है। शिक्षक के सोचने एवं व्यवहार के शांतिपूर्ण तरीकों को प्रदर्शित कर एक सकारात्मक आदर्श स्थापित कर सकता है।बालक के आत्मबल इच्छाशक्ती को सही दिशा व प्रेरणा मिले तनाव दोष घृणा का स्तर बालकों में कम हो बिना झगडे किसी भी समस्या का समाधान सत्य अहिंसा के द्वारा निकाला जाए सभी को उनके नैतिक मुल्यों का व दायित्वों का बोध हो तथा सभी अपना कार्य स्वयं करें। शिक्षा मानव के संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करती है और शांति शिक्षा को स्कूल विद्यालयों या महाविद्यालयों के द्वारा मुख्यतः प्राप्त किया जा सकता है। इन सब के लिए सर्वप्रथम शांति शिक्षा के प्रति अध्यापकों को जागरूक होना अति महत्वपूर्ण है। अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह स्वयं पहले अपने व्यवहार में शांति को अपनायें क्योंकि छात्र अध्यापकों का ही अनुकरण करते है। वर्ष २००९ मे नोबल शांति पुरस्कार प्राप्त करने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा ने बेझिझक कहा "मैं शांतिदूत महात्मा गांधी को अपना आदर्श मानता हूँ।" सच है हमें गौरवान्वित होना चाहिए कि भारत भूमि में कई ऐसी हस्तियों ने जन्म पाया है जिन्होनें विश्व को शांति एवंम अहिंसा का पाठ पढाया है। स्वंय गांधीजी ने कहा था " शिक्षा का अंतिम उददेश्य चरित्र निर्माण है।"

आइन्सटीन ने कहा है कि " शांति को बलपूर्वक नहीं रखा जा सकता है यह केवल समय से ही प्राप्त की जा सकती है और यह बच्चों स्कूल कॉलेजो विश्वविद्यालयों एंव शैक्षणिक संस्थाओं की परिधियों के बाहर भी उत्पन्न की जा सकती है। यदि बच्चों को युध्द के लिए शिक्षित किया जा सकता है तो उन्हें शांति के लिए कयों नहीं शिक्षित किया जा सकता है?" इसलिए भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी सुझाव दिया था कि शांति के लिए शिक्षा का पाठ विद्यालय व विश्वविद्यालय में होना चाहिए। युनेस्को की धारणा है कि शिक्षा द्वारा ही विश्व शांति की स्थापना की जा सकती है। युनेस्को के संविधान की प्रस्तावना में लिखा है कि युध्दों का जन्म व्यक्ति के मस्तिष्क मे होता है। अतः युध्द से बचने के लिए व्यक्ति के मस्तिष्क मे शांति की आधारशीला रखनी चाहिए। इस कार्य को अध्यापक ही सफल तरीकों से कर सकता है क्योंकि शिक्षा द्वारा ही विद्यार्थियों को विश्व में होने वाले परिवर्तनों एवं घटनाओं से अवगत कराकर इस बात का आभास दिलाया जा सकता है कि शांति शिक्षा कितनी महत्वपूर्ण है।

आज के मानव का मस्तिष्क अशांत है और वह इतना अशांत है कि शांति के लिए उसे प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है और वह प्रशिक्षण कार्य शांति शिक्षा से ही संभव हो सकता है। इस कार्य का उत्तरदायित्व समाज के लघुरुप 'विद्यालयों' और 'महाविद्यालयों' को सौंपा गया है। शांति के लिए पहल तो हर देश को करनी होगी क्योंकी यह सिध्द हो चुका है कि युध्द से हथियारों से या फिर आतंकवाद से कोई मुद्दे नहीं सुलझते है। बाइबल का एक वाक्य है "जो तलवार चलाएगा वह उसी से खत्म हो जाएगा" उदा. पाकिस्तान, इराक, आदि।
शांतिपूर्ण तरीकों अथवा अहिंसा अपनाने के लिए यह आवश्यक है कि-

हमें शांतिपूर्ण तरीकों में विश्वास हो।
हमें अपने आप में विश्वास हो।
मानव मे निहित अच्छाई में विश्वास हो।
म भय से मुक्त हो।

शिक्षा के द्वारा ही भावी पीढी में इन पूर्वावश्यक्ताओं को विकसित किया जा सकता है। विद्यार्थियों में शांति शिक्षा का महत्व उसकी आवश्यक्ता व उसके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने का कार्य अध्यापकों को दिया गया है। अध्यापक का व्यक्तित्व आदर्श एवं अनुकरणीय माना गया है यदि किसी भी स्तर पर कोई परिवर्तन करना है तो शिक्षक के द्वारा सहज रूप से किया जा सकता है। अध्यापक के सोचने एवं व्यवहार के शांतिपूर्ण तरीकों को प्रदर्शित कर एक सकारात्मक आदर्श स्थापित करना होगा। यह सब तभी संभव है जब शांति शिक्षा के प्रति अध्यापक जागरूक होगा तथा अध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्मक होगा।

" Love goes to the Heart, Peace goes to the Mind,
So let's forgive and be, Peace makers all the Time."

संदर्भ ग्रंथ

१ . वंदना वोहरा (२००९) शोध प्रविधी नई दिल्ली आमेगा पब्लिकेशनअ

२ . लोकमान्य तिलक टिचर ट्रेनिंग कॉलेज़ (2010), अंतर्राष्ट्रीय सभा उदयपुर राजस्थानअ

३ . डॉ . आर . ए . शर्मा (2011), शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्व एवं शोध प्रकिया मेरठ आर लाल बुक डिपोअ

४ . डॉ . कुडलेसुलेखा डॉ . बरवे डॉ . महाले संजीवनी (2005) एम . एड . संशोधक मार्गदर्शिका भाग १ व य . च . म . मु . वि . नाशिक .

५ . प्रा . पंडीत ब . वि (1997) शिक्षणातील संशोधन संकल्पनात्मक परिचय पुणे नुतन प्रकाशन .

६ . डॉ . जगताप(2006,2008), शिक्षणातील नवप्रवाह व नवप्रवर्तने पुणे नित्य नुतन प्रकाशन .

७ . श्रीमती नलिनी वाद्य(2010,2011) धनजंय बी . एड . प्रश्नोत्तर नोटस सांगली धनंजय प्रकाशन .

८ . Dr.Loknath Mishra, (2009), Peace Education Framework For Teachers, New Delhi,A.P.H.Publishing Corporation.

९ . www.peace.ca/foundation.html

१० .www.peace.uit.no

११ . www.worldpeacenewsletter.html

१२ . www.haguepeace.org

१३ . www.wiscomp.org/peaceprients.html

१४ .www.upeace.org

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org